

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 19, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट की मानवता, अधीनता, त्रुटिहीनता, एकरूपता , और विशेषताओं का संचार

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके शिक्षण का सत्र है। यह सत्र 19 है, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट की मानवता, अधीनता, त्रुटिहीनता, एकरूपता , और गुणों का संचार।

हम क्राइस्टोलॉजी और सिस्टमैटिक क्राइस्टोलॉजी तथा क्राइस्ट के व्यक्तित्व का उनकी मानवता के संदर्भ में अध्ययन जारी रखते हैं।

मसीह के व्यक्तित्व की एकता की ओर बढ़ने से पहले हमें दो मुद्दों पर विचार करना होगा। इनमें से एक मुद्दा अधीनतावाद है, दूसरा है पाप-क्षमता , दोष-क्षमता की चर्चा। अधीनतावाद इस अवधारणा के लिए बाइबिल का वारंट है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि धर्मग्रंथ सिखाते हैं, परमेश्वर का पुत्र स्वयं सिखाता है, कि वह पिता के अधीन है या, यूहन्ना 14 और पद 28 की भाषा का उपयोग करें, पिता मुझसे बड़ा है। वह अपने शिष्यों से कहता है कि उन्हें आनन्दित होना चाहिए कि वह उन्हें छोड़ रहा है; यह उनके लिए समझना कठिन है क्योंकि वह पिता के पास जा रहा है, और पिता यीशु से बड़ा है, शाब्दिक रूप से। मैं पिता के पास जा रहा हूँ, यीशु ने कहा, उद्धरण, क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है। बेशक, इसका अर्थ यह है कि पिता मुझसे बड़ा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पुत्र का पिता के अधीन होना बाइबिल में वर्णित है।

इसी तरह, एक आयत में जिसे हमने पहले देखा था, दूसरी आयत में जिसे हमने पहले देखा था, इसलिए यह वास्तव में नया नहीं है, हालाँकि मैं वास्तव में दो अलग-अलग प्रकार के अधीनतावाद के बीच अंतर स्पष्ट करना चाहता हूँ। यूहन्ना 5:26, जैसा कि पिता के पास स्वयं में जीवन है, उसने बेटे को भी स्वयं में जीवन दिया है। यह उलटा नहीं हो सकता।

आप यह नहीं कह सकते कि बेटे ने पिता को अपने अंदर जीवन रखने की अनुमति दे दी है। यानी बेटा खुद को पिता के अधीन कर देता है। पिता ने अवतार लेने की इच्छा जताई।

बेटे ने पिता के अवतार की इच्छा नहीं की। पिता या आत्मा का कोई अवतार नहीं है। और इसलिए, हम पहले, दूसरे और तीसरे व्यक्ति में अंतर करते हैं।

आत्मा पिता और पुत्र का सेवक है। संख्या के मामले में इस अंतर का मतलब यह नहीं है कि वे समान नहीं हैं। वे समान हैं।

वे सह-शाश्वत हैं। वे त्रिदेव के बराबर सदस्य हैं। फिर भी, परमेश्वर की योजना को साकार करने के लिए, बाइबिल की कहानी के लिए, छुटकारे के लिए, पिता ने पुत्र को संसार में भेजा।

गलातियों 4:4. और पिता और पुत्र ने पित्तुकुस्त के दिन आत्मा को भेजा। लेकिन हम इस समय आत्मा के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम पुत्र के बारे में उसके अपने होठों से बात कर रहे हैं।

हमने सीखा कि बेटा पिता के अधीन था। इसलिए, इसका अध्ययन अधीनतावाद को शामिल करता है। इसके दो प्रकार हैं और उन्हें अलग करना चाहिए।

आवश्यक अधीनतावाद कहता है कि पुत्र की पिता के प्रति अनिवार्य अधीनता है। यह एक अधीनता है, जैसा कि विशेषण आवश्यक इंगित करता है, सार या अस्तित्व की। ऑन्टोलॉजिकल रूप से, आवश्यक अधीनतावाद पुष्टि करता है, ऑन्टोलॉजिकल या आध्यात्मिक रूप से, पुत्र सार, अस्तित्व, बनावट में पिता से कमतर, अधीनस्थ और निम्न है।

इस प्रकार, यह आवश्यक अधीनता मसीह के ईश्वरत्व की पुष्टि के साथ असंगत है। यह धार्मिक उदारवाद की त्रुटि है और पंथों की त्रुटि है। हाँ, शास्त्र कहता है कि यीशु ने कहा कि पिता मुझसे बड़ा है। लेकिन नहीं, इसका मतलब उनके आवश्यक अस्तित्व में नहीं है।

यह पिता और पुत्र की समानता का खंडन नहीं है। अनिवार्य अधीनतावाद गंभीर रूप से गलत है क्योंकि यह लोगों को अनुग्रह से दूर कर देता है। यदि मसीह ईश्वर का अवतार नहीं है, तो हम उद्धार के लिए उस पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? लेकिन एक मिनट रुकिए, मसीह की अवधारणा और गर्भाधान में त्रुटियाँ उसे नहीं बदलतीं।

यह सच है। लेकिन मसीह की अवधारणा में गलतियाँ, यानी मसीह के बारे में झूठी शिक्षा, एक व्यक्ति को अनुग्रह से दूर कर देती है क्योंकि अगर मैं अपना पूरा भरोसा किसी स्वर्गदूत या किसी साधारण मनुष्य पर रखूँ तो यह काम नहीं करता। बाइबल में वर्णित मसीह ईश्वर-मनुष्य है।

और हाँ, हम पापियों और हमारे उद्धार के लिए, उसने खुद को अधीन कर लिया; उसने खुद को पिता के अधीन कर लिया। लेकिन यह कोई अनिवार्य अधीनता नहीं है। यह एक आर्थिक अधीनता है।

यह कार्य, काम, भूमिका की अधीनता है। पुत्र अपने आप को पिता के अधीन कर देता है ताकि वह छुटकारे का कार्य कर सके। पुत्र अपने लोगों की खातिर मरने वाले और फिर से जी उठने वाले देहधारी पुत्र के रूप में अपनी भूमिका में अपने आप को पिता के अधीन कर देता है।

आर्थिक या कार्यात्मक अधीनता मसीह के ईश्वरत्व की पुष्टि के साथ संगत है। इसलिए, हम कभी भी शास्त्रों से भागते नहीं हैं। हम हमेशा उन्हें समझ नहीं पाते हैं, लेकिन शास्त्र यह सिखाता है कि पुत्र पिता से छोटा है, अगर आप चाहें तो, कि पिता पुत्र से बड़ा है, और पिता ने पुत्र को अपने अंदर जीवन देने के लिए दिया है।

लेकिन यह सब बेटे की विनम्रता, बेटे की अधीनता, बेटे की पिता के अधीनता से संबंधित है जो सार या आवश्यक अस्तित्व को नहीं छूता है बल्कि बेटे के उद्धार के कार्य, मध्यस्थ के रूप में बेटे की भूमिका, बेटे के कार्य को छूता है। इस प्रकार, हम स्वीकार करते हैं, वास्तव में, कि हम बेटे की पिता के प्रति आर्थिक अधीनता में आनन्दित होते हैं क्योंकि यही हमें बचाता है। बेटा हम में से एक बन जाता है, एक परिपूर्ण जीवन जीता है, और पिता के सेवक के रूप में अपनी भूमिका को पूरा करने में हमारे स्थान पर मर जाता है।

और हाँ, इस तरह से स्वामी नौकर से बड़ा है। पिता बेटे से बड़ा है, लेकिन बेटा पिता के बराबर है। इसलिए, हम इस प्रकार स्वीकार करते हैं, चर्च ऐतिहासिक के साथ, एक कार्यात्मक या आर्थिक ऐतिहासिक शब्द है, एक आर्थिक या कार्यात्मक अधीनता, और इसलिए इसका अध्ययन, एक आर्थिक या कार्यात्मक अधीनतावाद है।

क्या मसीह पाप करने में सक्षम था? यह त्रुटिहीनता, त्रुटिहीनता की बहस है। और मैंने देखा है कि लोग इस पर लगभग मारपीट पर उतर आए हैं। त्रुटिहीनता कहती है, पाप के लिए लैटिन शब्द पेकेटम है।

पेकाटम . इम्पेकेबिलिटी कहती है, देहधारी पुत्र पाप करने में असमर्थ था। पेकेबिलिटी कहती है, देहधारी पुत्र पाप करने में सक्षम था।

दोनों पक्षों में योग्य समर्थक हैं। लुइस बर्कहोफ़, जिनके व्यवस्थित धर्मशास्त्र का उपयोग छात्रों की एक पूरी पीढ़ी को बाइबल की शिक्षाओं के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए किया गया था। उन्होंने त्रुटिहीनता सिखाई, जैसा कि अधिकांश लोग करते हैं। मेरे पास यहाँ पूरा सर्वेक्षण नहीं है, लेकिन मैं इसके प्रति संवेदनशील हूँ क्योंकि यदि आप मुझ पर दबाव डालते हैं, तो मैं अल्पमत की स्थिति में आ जाता हूँ, जिसे मैं थोड़ी देर में समझाऊँगा।

और मैं इसे इस तरह से करूँगा कि यह एक गौण मामला हो, कि कुछ मामले स्पष्ट और बाइबिल के अनुसार हों, कि हम उन पर खड़े हों, और इस पर कोई कहाँ पहुँचता है, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन सबसे पहले, जैसा कि लुई बर्कहोफ़ जैसे रूढ़िवादी व्यक्ति ने त्रुटिहीनता सिखाई, चार्ल्स हॉज जैसे रूढ़िवादी व्यक्ति ने, जिन्होंने छात्रों की पिछली पीढ़ी या शायद दो को भी त्रुटिहीनता सिखाई। बर्कहोफ़ ने कहा कि मसीह पाप करने में असमर्थ है।

हॉज ने कहा कि वह पाप करने में सक्षम था। अब, अन्य अच्छे लोग त्रुटिहीनता सिखाते हैं। मैं जिस पुस्तक का प्रचार कर रहा हूँ, वह कॉन्ट्रर्स ऑफ़ क्रिश्चियन थियोलॉजी में पुस्तक के लेखक के रूप में, स्कॉटिश धर्मशास्त्री डॉनाल्ड मैकलियोड की है, जो त्रुटिहीन है।

और मैं अन्य नाम भी बता सकता हूँ, जो अभी मेरी जुबान पर नहीं आ रहे हैं। लेकिन बर्कहोफ़, पेकेबिलिटी। हॉज, पेकेबिलिटी।

क्या स्पष्ट है? जो स्पष्ट है वह यह है कि यीशु ने पाप नहीं किया। हर कोई इस बात से सहमत है। ठीक है? उसने पाप नहीं किया।

निष्कलंकता के बारे में कहना भाइयों और बहनों, अगर वह तब पाप कर सकता था, तो वह अब पाप कर सकता है और मोक्ष की पूरी संरचना को ध्वस्त कर सकता है। अनुचित। अनुचित।

हर कोई कहता है कि न केवल यीशु ने पाप नहीं किया, बल्कि अब वह पाप नहीं कर सकता। इस बात पर सार्वभौमिक सहमति है। हर बाइबल-विश्वासी धर्मशास्त्री।

क्या अंतर है? यह उसकी दो अवस्थाओं के बीच का अंतर है। अपमान की स्थिति में, वह सीमित था। वह कमज़ोर और असुरक्षित था।

हालाँकि, उसने कभी पाप नहीं किया। परमानंद की स्थिति में, वह सीमित नहीं है। वह लौकिक सांसारिक क्षेत्र से पारलौकिक स्वर्गीय क्षेत्र में चला जाता है।

वह फिर कभी प्रलोभन में नहीं आएगा। उसे कभी पीटा नहीं जाएगा, न ही वह कभी पीड़ित होगा और न ही मरेगा। अरे नहीं।

वह महिमावान मसीह है जो वापस आता है और अपने वचन से अपने शत्रुओं का नाश करता है। वह महिमावान मसीह है जो स्वर्ग और नरक का प्रभु है। मेरा मतलब पिता या पवित्र आत्मा को छोड़ना नहीं है, लेकिन मैं इस तथ्य पर जोर दे रहा हूँ कि न केवल यीशु ने कभी पाप नहीं किया, पूर्ण सार्वभौमिक सहमति है, बल्कि वह कभी पाप नहीं करेगा।

सार्वभौमिक सहमति। अतिउत्साह की स्थिति में, यह असंभव है। वह दोषरहित है।

फिर भी, अच्छे लोग असहमत हैं। सहमति का एक और बिंदु, हालाँकि एक पक्ष दूसरे की कीमत पर अंक हासिल करने का दावा करता है, वह यह था कि वह वास्तव में लुभाया गया था। और यही चार्ल्स हॉज के लिए मामले का सार है।

वह कहते हैं कि अगर यीशु को सच में परीक्षा में डाला गया था, तो उनके लिए पाप करना संभव था। ओह, बिल्कुल नहीं। उनके अंदर कोई पापी सिद्धांत नहीं है, कोई प्रवृत्ति नहीं है, कोई पापी स्वभाव नहीं है, जो हर किसी की तरह पाप की ओर बढ़े।

बाकी सभी की तरह नहीं। आदम के पास, पतन से पहले, यह नहीं था, और वह वास्तव में परीक्षा में था, और वह न केवल पाप करने में सक्षम था, बल्कि उसने पाप किया भी। मैं इसे फिर से कहूँगा: चाहे यीशु पापी था या दोषहीन, उसने पाप नहीं किया।

हॉज कहते हैं, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि यीशु के प्रलोभन वास्तविक कैसे हो सकते हैं। उनके लिए पाप करना बिल्कुल असंभव था। दूसरी ओर, अच्छे लोग, और वे अच्छे लोग हैं, हे भगवान, बर्कहॉफ़, मैकलियोड और कई अन्य लोग कहते हैं कि वह पाप नहीं कर सकते थे; यह सच है, उन्होंने पाप नहीं किया।

यह सच है, और वह अब पाप नहीं कर सकता। निष्पक्षता में, हम उन सच्चाइयों पर अपनी पापपूर्णता से सहमत हैं, भाइयों और बहनों। यह भी सच है कि उसे प्रलोभन दिया गया था, हालाँकि वह कभी नहीं, और वह पाप नहीं कर सकता था।

क्योंकि, वे कहते हैं, वह ईश्वर-मनुष्य है। वे उसकी दिव्यता का हवाला देते हैं कि वह पाप क्यों नहीं कर सकता। मैं इस पर कोई रुख नहीं अपनाना चाहता, लेकिन मेरे छात्रों ने हमेशा मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया।

तो, मैंने इसे इस तरह किया। ये मामले स्पष्ट हैं। यीशु ने पाप नहीं किया, हालाँकि वह वास्तव में परीक्षा में था, और अब वह पाप नहीं कर सकता।

हम सहमत हैं। यह सब कहने के बाद, मैं विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहूँगा कि मैं कभी भी यह मुद्दा नहीं बनाऊँगा कि चर्च में शामिल होने के लिए आपको किस बात पर विश्वास करना होगा। दूसरे पक्ष के प्रति बहुत सम्मान के साथ, मैं हॉज से सहमत हूँ कि यह प्रलोभनों के बारे में अधिक समझ में आता है कि यीशु दूसरे आदम थे और यह कहना कि वह पाप कर सकते थे, लेकिन उन्होंने कभी नहीं किया।

प्रलोभन मुख्य रूप से उसके ईश्वर होने से संबंधित नहीं हैं। बल्कि वे उसके हम में से एक होने से संबंधित हैं, और मुझे संदेह है कि त्रुटिहीनता उसकी मानवता की कीमत पर उसके ईश्वरत्व को बढ़ाने का एक और प्रयास है, जिस पर मैं विश्वास करता हूँ। लेकिन पीटर इस पर कोई अभियान शुरू नहीं करने जा रहा है या ऐसी किताबें नहीं लिखने जा रहा है जो दूसरे पक्ष को कुचल दें, उन्हें बहिष्कृत करें, या उन्हें नीचा दिखाएं।

ऐसा करना उचित नहीं है। मैं अपने सेमिनरी के धर्मशास्त्र के प्रोफेसर रॉबर्ट जे. डनज़वीलर का ज़िक्र करूँगा, जिन्होंने दो बातें कही थीं। शायद यह ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है।

नंबर एक, मैंने एक बार उनके लिए एक पेपर लिखा था जिसमें उन्होंने बेदागी की वकालत की थी, और यह दिखाने के लिए कि वह कितने निष्पक्ष हैं, उन्होंने मेरे पेपर पर लिखा, "अच्छा काम," उन्होंने कहा। सहमति हमेशा काम के मूल्यांकन का आधार नहीं होती। वह मुझसे असहमत थे, और जाहिर है, मैंने तब से अपना विचार बदल दिया है, हालाँकि मैं बेदागी का कट्टर समर्थक नहीं हूँ, जैसा कि आप पहले ही देख सकते हैं।

लेकिन उन्होंने कहा, नंबर एक, उन सत्यों के साथ, जिन पर मैं बार-बार जोर देता रहा हूँ, यीशु ने पाप नहीं किया; वह वास्तव में परीक्षा में था, और वह अब पाप नहीं कर सकता। उसने कहा कि वह ईश्वर-मनुष्य के रूप में पाप करने में सक्षम था, और फिर भी, ईश्वर की योजना में, वह पाप करने में असमर्थ था। शायद ऐसा करने का यही तरीका है।

तो क्या मैं दावा करता हूँ कि मेरे पास सभी उत्तर हैं? नहीं। लेकिन कृपया, जो स्पष्ट है उस पर जोर दें, जो स्पष्ट नहीं है उस पर जोर न दें, और अपने भाइयों और बहनों को गोली न मारें जो आपसे छोटी-छोटी बातों पर असहमत हैं, जबकि भाइयों और बहनों के लिए प्रेम से असहमत

होना पूरी तरह से उचित है। हम मसीह के व्यक्तित्व का अध्ययन करने वाले अपने अंतिम मुख्य विषय पर आगे बढ़ते हैं।

हमने उनके पूर्व-अस्तित्व का अध्ययन किया है। ईश्वर के पुत्र का अस्तित्व बेथलेहम में शुरू नहीं हुआ था। हमारे प्रभु की मानवता तब शुरू हुई थी।

हमने अवतार के चमत्कार का अध्ययन किया। शाश्वत, सर्वशक्तिमान ईश्वर पवित्र आत्मा द्वारा मरियम के गर्भ में अपनी मानवता के चमत्कारी गर्भाधान के साथ एक मानव बन गया, ताकि उसके बाद से, वह एक व्यक्ति में दो स्वभावों वाला ईश्वर-मनुष्य हो। हमने उसके परिणामी देवता का अध्ययन किया है, और हमने उसके पुत्र होने में व्यक्तित्व की निरंतरता पाई है।

वह पूर्व-अवतार पुत्र था जो अवतार पुत्र बन गया। व्यक्तित्व की निरंतरता उसकी मानवता द्वारा प्रदान नहीं की जाती है क्योंकि उसकी एक शुरुआत थी, उसके पुत्रत्व के विपरीत। फिर हमने उसकी मानवता और अंत में, उसके एक -व्यक्तित्व का अध्ययन किया।

वह एक व्यक्ति है। पहली बात जो कही जानी चाहिए वह यह है कि यह वास्तव में दो स्वभावों का एक व्यक्तिगत मिलन है। मसीह के दिव्य और मानवीय स्वभाव एक व्यक्तिगत, या पैट्रिस्टिक शब्द का उपयोग करने के लिए, हाइपोस्टेटिक मिलन में जुड़े हुए हैं।

यह एक व्यक्तिगत मिलन है। यानी, मरियम के गर्भ में ईश्वर द्वारा इसकी रचना से पहले उसके मानव स्वभाव का कोई अस्तित्व नहीं था। ईश्वर किसी मौजूदा इंसान में आकर नहीं बसे।

उस तरह से कोई भी मनुष्य अस्तित्व में नहीं था, हालाँकि मुझे यह शब्दावली पसंद नहीं है। उसकी मानवता अवैयक्तिक थी। आपको यह क्यों पसंद नहीं है? क्योंकि उसकी मानवता कभी भी अवैयक्तिक नहीं थी, हालाँकि यह मरियम के गर्भ में उसके गर्भधारण के क्षण से ही एक अलग मानव के रूप में अस्तित्व में नहीं थी। यह बिल्कुल व्यक्तिगत थी क्योंकि यह वचन, प्रकाश, पुत्र और त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति से जुड़ी हुई थी।

एक बार फिर, व्यक्तित्व की निरंतरता मनुष्य होने से नहीं बल्कि ईश्वर होने से है। वह पूर्व-अवतार लोगो है, और वह अवतार लोगो बन जाता है। और जैसे ही हमारे प्रभु की मानवता गर्भ में आती है, आत्मा उसे हमारे प्रभु के देवत्व से जोड़ देती है ताकि वह मरियम के गर्भ में पहले से ही ईश्वर और मनुष्य हो।

रहस्यमय? बिल्कुल रहस्यमय। लेकिन, इस अर्थ में कभी भी कोई अवैयक्तिक मानवता नहीं होती कि ईश्वर आया और यीशु नामक व्यक्ति में वास किया। नहीं, नहीं।

यीशु के गर्भ में आने से पहले ही, प्रभु ने स्वर्गदूत गेब्रियल के माध्यम से मरियम से कहा था, कि जो गर्भ में है, पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, परमेश्वर तुम पर छाया करेगा, ताकि जो तुमसे पैदा होगा वह पवित्र हो, परमेश्वर का पुत्र। और मत्ती 1 में दो बार, परमेश्वर ने मत्ती को अधिक संक्षिप्त रूप में बताया, कि जो तुम्हारी मरियम में गर्भ में होगा, जिससे तुम्हें विवाह करने में संकोच नहीं

करना चाहिए, वह पवित्र आत्मा से है। इसलिए, मसीह के व्यक्तित्व की एकता के बारे में कही जाने वाली पहली बात यह है कि यह एक व्यक्तिगत मिलन है।

दूसरी बात जो कही जानी चाहिए, वह है विशेषताओं का संचार, लैटिन, संचार इडियोमेटम, विशेषताओं का संचार, एक बाइबिल शिक्षा है। ओह, रिफॉर्म और लूथरन वास्तव में इस पर एक दूसरे से असहमत हैं। वास्तव में, वे इसके कुछ पहलुओं से सहमत हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण पहलू से वे सहमत नहीं हैं।

यहाँ तथ्य दिए गए हैं। कभी-कभी, धर्मग्रंथ मसीह, व्यक्ति को एक ऐसे शीर्षक से संदर्भित करते हैं जो उसके देवता से मेल खाता है, जबकि उसी वाक्य में उसे एक ऐसा गुण दिया जाता है जो उसकी मानवता से संबंधित है। यह पैट्रिस्टिक सिद्धांत का आधार है; पिताओं ने इसे बाइबिल में संचार और गुणों के आदान-प्रदान के रूप में पाया।

आइए इनमें से कुछ पर नज़र डालें। समझने के लिए आइए कुछ प्रेरणा लें। मैं निष्कर्ष और मूल्यांकन की शुरुआत यह कहकर करूँगा कि सुधारवादियों का कहना है कि बाइबल में बोलने का यही तरीका है।

यह ऑन्टोलॉजी से संबंधित नहीं है। यह हेर्मेनेयुटिक्स से संबंधित है। यह बोलने का एक तरीका है।

यह मसीह की एकता पर जोर देने के लिए एक साहित्यिक उपकरण है। लूथरन कहते हैं, नहीं, यह उससे कहीं अधिक है। क्या आप सुधारवादियों को इसे मात्र एक अलंकार में नहीं बदलने देते क्योंकि वे सिखाते हैं, ईश्वरीय बाइबल-विश्वासी लूथरन सिखाते हैं, ईश्वर के पुत्र के पुनरुत्थान में, वास्तव में, ईश्वरीय गुण वास्तव में और वास्तव में उसके ईश्वरीय स्वभाव से उसके मानवीय स्वभाव में संचारित हुए थे?

इसमें एक ऑन्टोलॉजिकल शेयरिंग है, इसलिए अब उसकी मानवता सर्वव्यापकता या सर्वव्यापकता के दिव्य गुण को साझा करती है। इसे देखना मुश्किल नहीं है। प्रेरणा यूचरिस्टिक है।

यह लूथर को सक्षम बनाता है, हालाँकि उसने इसे उतना विकसित नहीं किया जितना उसके वंशजों ने धर्मशास्त्रीय रूप से किया, यह उन्हें यह कहने में सक्षम बनाता है कि मसीह प्रभु के भोज में तत्वों के साथ, उनके अंदर और उनके अधीन है। रोमन कैथोलिक अर्थ में ट्रांसबस्टैंटिएशन, एक आंतरिक चमत्कार नहीं है जहाँ बाहरी तत्व एक जैसे दिखाई देते हैं। थॉमस ने अरिस्टोटेलियन तर्क का उपयोग करके दुर्घटनाओं और सार को अलग किया।

दुर्घटनाएँ वे चीज़ें हैं जो आँखों को आकर्षित करती हैं। इसलिए, पुलपिट के अलग-अलग रंग और अलग-अलग आकार हो सकते हैं। ठीक है, वे दुर्घटनाएँ हैं। लेकिन पुलपिट, पुलपिट का सार, किसी तरह की संरचना होती है, और यह एक निश्चित ऊँचाई पर होती है जहाँ कोई उपदेशक या शिक्षक उस पर बाइबल रख सकता है, है न? अगर मैं कोई शब्द बना सकता हूँ, तो यह पुलपिटिज़्म का सार या सार है, है न? यही पुलपिट का सार है।

रंग: लाल, काला, नीला, हरा, यह एक दुर्घटना है। सटीक आकार, यह एक दुर्घटना है। सटीक ऊंचाई, और जिस सामग्री से इसे बनाया गया है, वे सभी दुर्घटनाएं हैं।

लेकिन एक पल्पिट होने का अनिवार्य तत्व, और यह इस तरह से बेहतर है, एक निश्चित ऊंचाई, एक निश्चित मंच है जहाँ आप अपनी बाइबिल रख सकते हैं, है न? बेशक, मैं इसे आगे बढ़ते हुए बना रहा हूँ। थॉमस एक्विनास के लिए, जो एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, रोटी और शराब और उनका बाहरी रूप संयोग मात्र हैं। सार मसीह का शरीर और रक्त है।

और भगवान, मास में घंटी की झनकार पर, जैसा कि रोमन चर्च के नियुक्त मंत्री को पुजारी कहा जाता है, उसे नियुक्त किया जाता है और समन्वय में शक्ति प्राप्त होती है, जैसा कि रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र कहता है, मास के गैर-खूनी बलिदान में मसीह की पेशकश करने के लिए। घंटी की झनकार पर, दुर्घटनाएँ वही रहती हैं, लेकिन सार, तत्वों की प्रकृति बदल जाती है। एक ट्रांस-चेंज प्रमाण है, सार का परिवर्तन, बाहरी रूप नहीं।

यह अभी भी रोटी और शराब की तरह दिखता है, लेकिन अंदर से, एक चमत्कार है। लूथर ने इसे सिरे से खारिज कर दिया। वह इस बात से नाराज था।

हम इस चमत्कार को नाम देने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं? इसलिए मुझे नहीं लगता कि वह इस चीज़ को लैटिन के कॉन्सबस्टैंटिएशन, कॉन् से पुकारने के बड़े प्रशंसक होंगे। तत्वों के साथ, तत्वों के साथ और तत्वों के नीचे, मसीह मौजूद है। लेकिन लूथर ने सिखाया कि मसीह प्रभु के भोज में उतना ही मौजूद था जितना कि थॉमस एक्विनास सहित किसी भी रोमन कैथोलिक ने कभी सिखाया था।

वह कैसे मौजूद है? चमत्कारिक ढंग से। आप इसे कैसे समझाएँगे? आप नहीं समझाएँगे। खैर, यहाँ एक स्पष्टीकरण है, जितना कि एक है, वह यह है कि मसीह के पुनरुत्थान में, दैवीय गुण यीशु के ईश्वरत्व से उसकी मानवता में स्थानांतरित हो गए थे, इसलिए अब उसकी मानवता एक ही समय में हर जगह मौजूद हो सकती है, और इस प्रकार यह पवित्र भोज में तत्वों के साथ, और उनके नीचे मौजूद हो सकती है।

अब शायद आपको इस बात से कोई आश्चर्य न हो कि मैं इस मामले में सुधारवादी दृष्टिकोण का पालन करता हूँ, लेकिन फिर भी, मैं अपने साथी सुधारवादी ईसाइयों के प्रति बहुत सम्मान रखता हूँ जो लूथरन हैं। आइए कुछ अंशों पर नज़र डालें जो गुणों के संचार की पुष्टि करते हैं। प्रेरितों के काम 3.15. पतरस उपदेश दे रहा है।

पीटर ने नॉर्मन विंसेंट पील का कोर्स नहीं लिया कि अपने श्रोताओं के प्रति दयालु कैसे बनें, दोस्त कैसे बनाएं और लोगों को कैसे प्रभावित करें। पीटर एक सख्त इंसान है, और वह अपने श्रोताओं को कई बार फटकार लगाता है। वह मूल रूप से बार-बार कहता है, आप, विशेष रूप से यहूदी नेताओं, लेकिन यहूदी लोगों ने, परमेश्वर के पुत्र को सूली पर चढ़ाया, और यहाँ पिता ने क्या किया।

उसने अपने बेटे को मरे हुआओं में से जीवित करके उसके प्रति अपना मूल्यांकन दिखाया, और तुम गंभीर संकट में हो। ओह, मेरा वचन। वह प्रेरितों के काम 3 की आयत 13 को लंगड़े आदमी के उपचार का श्रेय देता है। अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, हमारे पूर्वजों का परमेश्वर, अपने सेवक यीशु की महिमा करता है, जिसे तुमने सौंप दिया और पिलातुस की उपस्थिति में, जब उसने उसे रिहा करने का फैसला किया, तो तुमने उसका इन्कार कर दिया।

लेकिन तुमने पवित्र और धर्मी को अस्वीकार किया और एक हत्यारे को अपने लिए नियुक्त करने के लिए कहा, और तुमने जीवन के रचयिता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया। इसके हम गवाह हैं। यहाँ अभिव्यक्ति है: तुमने जीवन के रचयिता को मार डाला।

जीवन का लेखक एक दिव्य उपाधि है, ठीक है? इसका उपयोग किसी प्रेरित या स्वर्गदूत के लिए नहीं किया जा सकता है, है न? आप और मैं जीवन के लेखक नहीं हैं। केवल ईश्वर ही जीवन का लेखक है, और ईश्वर के पुत्र को उसके ईश्वरत्व में जीवन का लेखक कहा जा सकता है। हमने इसे यूहन्ना 1 में देखा। हमने इसे इब्रानियों 1 में देखा। हमने इसे कुलुस्सियों 1 में देखा। पुत्र सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि है।

ओह, पूर्व-अवतार पुत्र, लेकिन व्यक्तित्व की निरंतरता है। पूर्व-अवतार पुत्र, देहधारी पुत्र बन गया। लेकिन देखो यह उससे क्या कहता है।

मुझे लगता है कि इसे पढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है, सबसे पहले, श्लोक को सही करना। हाँ, मैं मज़ाकिया अंदाज़ में बोल रहा हूँ। और क्रिया को संज्ञा के अनुकूल बनाना।

उह, आपने जीवन के लेखक की पूजा की। आपने जीवन के लेखक की पूजा की। यह सब एक साथ चलता है।

या अगर आप इसे दूसरे तरीके से करना चाहते हैं, तो आपने यीशु नामक व्यक्ति को मार डाला। आपने बढ़ई के बेटे को मार डाला। क्या आप समझे? दिव्य उपाधि, दिव्य क्रिया।

मानव उपाधि, मानव क्रिया। लेकिन यहाँ एक क्रॉसिंग है। विशेषताओं का साझाकरण है।

यह नहीं कहता कि तुमने मनुष्य यीशु को मार डाला या तुमने जीवन के रचयिता की पूजा की। यह कहता है कि तुमने जीवन के रचयिता को मार डाला। ईश्वरीय उपाधि और मानवीय क्रिया, जो मानवीय गुण को इंगित करती है।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर की उपाधि, और यहाँ तक कि ईश्वर का जीवन का रचयिता होना भी मृत्यु और नश्वरता के साथ जुड़ा हुआ है। ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि एक ही व्यक्ति ईश्वर और मनुष्य दोनों है। वह जीवन का रचयिता था।

वह जीवन का रचयिता था, और आज भी है। उसने सृष्टि की। और उसे मार दिया गया क्योंकि जीवन का रचयिता मनुष्य बन गया और हमारे पापों के लिए क्रूस पर मर गया।

अर्थात्, यह एक अजीब तरीका है जिससे फादर्स ने व्यक्ति की एकता की पुष्टि की। उसी व्यक्ति को ईश्वर कहा जा सकता है, और उसके बारे में जो कहा जा सकता है वह मनुष्यों के लिए सच है और उसी वाक्य में ईश्वर के लिए नहीं। दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर-मनुष्य है।

यह गुणों का संचार है। एक दिव्य उपाधि, जीवन का निर्माता, एक मानवीय गुण, नश्वरता, सक्षम होना, नश्वर होना, मरने में सक्षम होना। न केवल वह मरने में सक्षम था, बल्कि वह मर गया।

प्रेरितों के काम 20, 28. यहाँ एक पाठ्य समस्या है, लेकिन किसी भी तरह से, कोई भी पाठ सही है; यह एक दिव्य शीर्षक है। चाहे वह परमेश्वर का चर्च हो या प्रभु का चर्च, अंत में यह एक ही बात है।

ये दोनों ईश्वरीय उपाधियाँ हैं। प्रेरितों के काम 20:28. पौलुस इफिसुस के प्राचीनों से बात करता है।

यह एक प्रोटो-प्रेस्बिटेरी की तरह है। इफिसुस के चर्च से, इफिसुस के बुजुर्ग आए हैं, और वे मिलिटस में पॉल से मिलते हैं, और वे उससे मिलते हैं इससे पहले कि वह आगे बढ़े और कहे कि वह उन्हें फिर कभी नहीं देखेगा। उनके लिए उसके पास कुछ गंभीर शब्द हैं।

पद 28. सावधान रहो, क्षमा करें, अपने आप पर और पूरे झुंड पर ध्यान दो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल करने के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया है, जिसे उसने अपने खून से प्राप्त किया है। कुछ पांडुलिपियों में परमेश्वर की कलीसिया लिखा है।

कुछ पांडुलिपियों में चर्च ऑफ द लॉर्ड लिखा है। वास्तव में, यह एक उलझन है, ठीक है? तथाकथित उच्च आलोचना की अवधि के नियमों के संदर्भ में, यह पता लगाने की कोशिश करते हुए, आप चर्च ऑफ गॉड या चर्च ऑफ द लॉर्ड कह सकते हैं। मेरे वर्तमान उद्देश्यों के लिए, हमारे वर्तमान उद्देश्यों के लिए, यह महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि इस संदर्भ में ईश्वर और प्रभु दिव्य उपाधियाँ हैं, है न? ईश्वर या प्रभु के रूप में नामित इस व्यक्ति के बारे में दिव्य उपाधि क्या कहती है? यहाँ बताया गया है कि यह क्या कहती है।

इसने अपने खून से चर्च प्राप्त किया। क्या परमेश्वर के पास खून है? वास्तव में, यह देखना अच्छा है कि यूनानी इस पर क्या प्रतिक्रिया देंगे। यह मूर्खतापूर्ण है।

यह घिनौना है। नहीं, याद रखें, यह यूनानी दर्शन था, प्लेटो और अरस्तू का, जिसने मानवता के संपर्क में आने वाले ईश्वर के पुत्र को मानवता से बचाने की कोशिश करने की इन धारणाओं को जन्म दिया, और अब आप कहने जा रहे हैं कि ईश्वर में खून है? नहीं, स्वर्ग में ईश्वर में खून नहीं है, लेकिन हाँ, धरती पर ईश्वर में खून है। ईश्वर एक इंसान बन गया ताकि वह मर सके।

बेशक, यहाँ खून का इस्तेमाल, पुराने नियम के बलिदान के संदर्भों की तरह, यहाँ जब यीशु के बलिदान की बात की जाती है, तो इसका मतलब है उसकी हिंसक मौत। परमेश्वर या प्रभु की

कलीसिया, जिसे उसने खरीदा, खरीदा, अपनी हिंसक मौत, अपने खून से छुड़ाया: ईश्वरीय उपाधि, परमेश्वर या प्रभु।

मानवीय गुण, एक बार फिर, वह मरने में सक्षम है; वह नश्वर है। ध्यान दें, एक ही वाक्य में संयुक्त लेकिन एक दूसरे के इतने करीब, यह जानबूझकर गिरफ्तार करने वाला है क्योंकि यह क्या रेखांकित करता है? मसीह के व्यक्तित्व की एकता। उसी व्यक्ति को भगवान या भगवान कहा जा सकता है, और उस व्यक्ति के बारे में, यह कहा जा सकता है कि उसने अपना खून बहाया।

जैसा कि हम अपने अगले व्याख्यान में देखेंगे, हम गुणों के संचार के अपने प्रेरक अध्ययन को जारी रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 19 है, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट की मानवता, अधीनता, त्रुटिहीनता, एकरूपता, और गुणों का संचार।